

अतिमुक्त कुमार

पोलासपुर नगर के राजा विजय और रानी श्रीदेवी का पुत्र राजकुमार अतिमुक्त अत्यंत सुकुमार, सुन्दर बालक था। एक दिन प्रातः माता श्रीदेवी ने अपनी दुलार

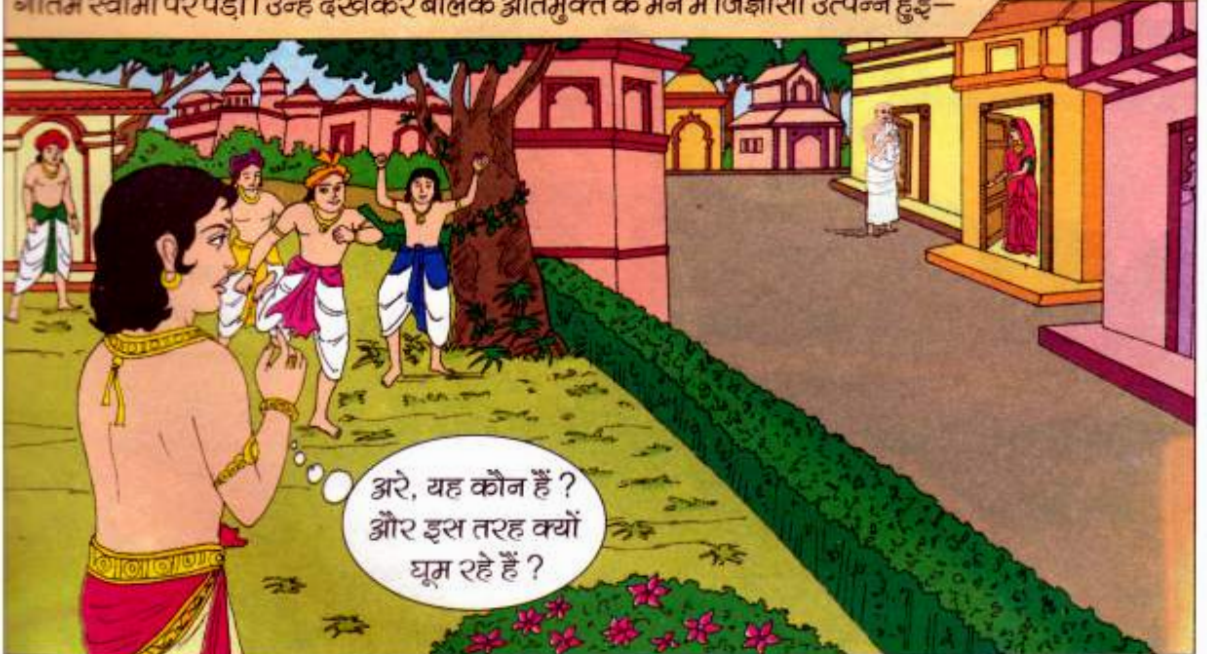
भरी बोली से बालक को जगाया—



उठो पुत्र! सवेरा हो गया है। सूर्य राजमहल में अपनी गुलाबी आभा बिखेर रहा है। चलो, उठो! देर मत करो।

बालक आलस दूर करता हुआ उठ गया।

और स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने मित्रों के साथ महल से थोड़ी दूर मैदान में खेलने चला गया। खेलते-खेलते अचानक उसकी दृष्टि राजमार्ग पर भिक्षा के लिए एक घर से निकलकर दूसरे घर में जाते गौतम स्वामी पर पड़ी। उन्हें देखकर बालक अतिमुक्त के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई—



अरे, यह कौन हैं?
और इस तरह क्यों
घूम रहे हैं?

बालक दौड़ता हुआ शीघ्र ही उनके पास पहुँचा और बोला—

हे पूज्यवर ! आप कौन हैं और इस तरह घरों में क्यों घूम रहे हैं ?

वत्स ! हम श्रमण हैं और भिक्षा के लिये विचरण कर रहे हैं ।



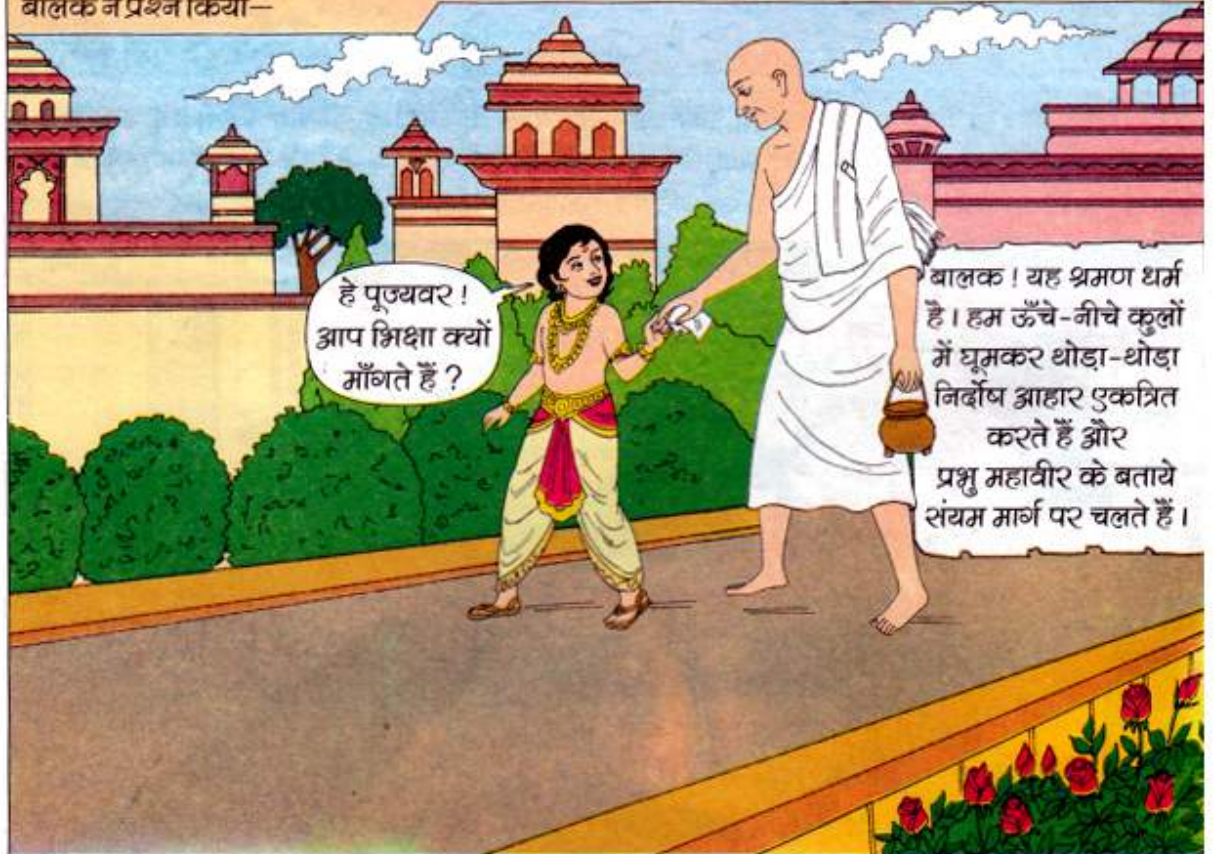
यह सुनकर बालक ने कहा—

अच्छा, तो ये बात है । आप मेरे घर पधारिये, वहाँ मेरी माता आपको बहुत-सा भोजन दे देंगी ।



ऐसा कहकर अतिमुक्त कुमार ने गौतम स्वामी की लँगली पकड़ी और उन्हें लेकर राजमहल की ओर चल दिया । छोटे बालक का निश्चल प्रेम भरा आग्रह देखकर गौतम स्वामी भी उसके साथ चल दिये । रास्ते में बालक ने प्रश्न किया—

हे पूज्यवर ! आप भिक्षा क्यों माँगते हैं ?



बालक ! यह श्रमण धर्म है । हम ऊँचे-नीचे कुलों में घूमकर थोड़ा-थोड़ा निर्दोष आहार एकत्रित करते हैं और प्रभु महावीर के बताये संयम मार्ग पर चलते हैं ।

इस प्रकार बातें करते-करते वे राजमहल के निकट पहुँच गये। दूर से माता श्रीदेवी ने अतिमुक्त कुमार को बौद्ध स्वामी की उँगली पकड़े महल की तरफ आते देखा तो मुग्ध हो उठीं। वे तुरन्त द्वार पर आईं और बौद्ध स्वामी को वन्दन-नमन किया—



अहो भाग्य मुनिराज !
आप हमारे घर पधारें।
हमें गोचरी-पानी का
लाभ दीजिए।

माताश्री ! इनको इतना
भोजन दीजिये कि कहीं
और न जाना पड़े।

माता ने मुनिश्री को गोचरी बोहरा दी।

बौद्ध स्वामी ने अपनी मर्यादा से भोजन आदि लिया और लौटने लगे। बालक ने पूछा—



अब आप
कहाँ जा रहे
हैं ?

वत्स ! नगर के बाहर
श्रीवन उद्यान में मेरे धर्मगुरु
भगवान महावीर पधारें
हुए हैं। मैं वापस वहीं जा
रहा हूँ।



अच्छा ! वे आपके
धर्मगुरु हैं। क्या मैं भी
उनसे मिलने आपके
साथ चलूँ ?

अवश्य ! तुम्हें उनके
दर्शन करके बहुत
सुख मिलेगा।

बौद्ध स्वामी की स्वीकृति पाकर अतिमुक्त कुमार भी भगवान के दर्शन करने चल दिया।